Nitya नित्य

श्री लक्ष्मी अष्टोत्तर शतनामावली

Lakshmi Ashtottara Shatanamavali

श्री लक्ष्मी अष्टोत्तर शतनामावली देवी लक्ष्मी के १०८ नामों की सूची है, जिसमें हर नाम "ॐ ... नमः" के साथ बोला जाता है और आरंभ "ॐ प्रकृत्यै नमः" से होता है। परिवार इसे शुक्रवार को, वरलक्ष्मी व्रत में और दीपावली के लक्ष्मी पूजन में पढ़ते हैं, और प्रायः हर नाम पर एक फूल या थोड़ा कुमकुम चढ़ाते हैं। दक्षिण भारत के बहुत से घरों में इसे लक्ष्मी अष्टोत्तरम् कहते हैं।

नाम १–६

ॐ प्रकृत्यै नमः ।

ॐ विकृत्यै नमः ।

ॐ विद्यायै नमः ।

ॐ सर्वभूतहितप्रदायै नमः ।

ॐ श्रद्धायै नमः ।

ॐ विभूत्यै नमः ।

ॐ सुरभ्यै नमः ।

ॐ परमात्मिकायै नमः ।

ॐ वाचे नमः ।१ ॥

ॐ। उन लक्ष्मी को नमस्कार, जो मूल प्रकृति हैं और उसके सारे बदलते रूप भी; जो विद्या हैं; जो सब प्राणियों का हित करती हैं; जो श्रद्धा और विभूति हैं; जो कामधेनु सुरभि हैं; जो परमात्म-स्वरूपा हैं; और जो वाणी हैं।

नाम १०–१८

ॐ पद्मालयायै नमः ।

ॐ पद्मायै नमः ।

ॐ शुचये नमः ।

ॐ स्वाहायै नमः ।

ॐ स्वधायै नमः ।

ॐ सुधायै नमः ।

ॐ धन्यायै नमः ।

ॐ हिरण्मय्यै नमः ।

ॐ लक्ष्म्यै नमः ।२ ॥

ॐ । कमल में वास करने वाली को, पद्मा को, पवित्र देवी को नमस्कार; देवताओं और पितरों को दी जाने वाली आहुति स्वाहा और स्वधा को; अमृत-स्वरूपा को; धन्य देवी को; स्वर्णमयी को; लक्ष्मी को नमस्कार।

नाम १९–२७

ॐ नित्यपुष्टायै नमः ।

ॐ विभावर्यै नमः ।

ॐ अदित्यै नमः ।

ॐ दित्यै नमः ।

ॐ दीप्तायै नमः ।

ॐ वसुधायै नमः ।

ॐ वसुधारिण्यै नमः ।

ॐ कमलायै नमः ।

ॐ कान्तायै नमः ।३ ॥

ॐ । सदा पुष्ट और पोषण देने वाली को, प्रकाशमयी देवी को नमस्कार; देवताओं और दैत्यों की माता अदिति और दिति को; दीप्तिमयी को; धन देने वाली धरती वसुधा को और धन धारण करने वाली को; कमला को; और प्रिय, सुन्दर देवी को नमस्कार।

नाम २८–३६

ॐ कामाक्ष्यै नमः ।

ॐ क्षीरोदसम्भवायै नमः ।

ॐ अनुग्रहपरायै नमः ।

ॐ बुद्ध्ये नमः ।

ॐ अनघायै नमः ।

ॐ हरिवल्लभायै नमः ।

ॐ अशोकायै नमः ।

ॐ अमृतायै नमः ।

ॐ दीप्तायै नमः ।४ ॥

ॐ । प्रेम भरे नेत्रों वाली कामाक्षी को; क्षीरसागर से प्रकट हुई देवी को; सदा कृपा करने को तत्पर देवी को; बुद्धि-स्वरूपा को; निष्पाप देवी को; हरि की प्रिया को; शोक-रहित देवी को; अमृत-स्वरूपा को; और फिर से दीप्तिमयी देवी को नमस्कार ।

नाम ३७–४५

ॐ लोकशोकविनाशिन्यै नमः ।

ॐ धर्मनिलयायै नमः ।

ॐ करुणायै नमः ।

ॐ लोकमात्रे नमः ।

ॐ पद्मप्रियायै नमः ।

ॐ पद्महस्तायै नमः ।

ॐ पद्माक्ष्यै नमः ।

ॐ पद्मसुन्दर्यै नमः ।

ॐ पद्मोद्भवायै नमः ।५ ॥

ॐ । जगत का शोक मिटाने वाली को; धर्म की आश्रय-स्थली को; करुणा-स्वरूपा को; लोकमाता को; कमल-प्रिया, हाथ में कमल लिए, कमल-नयनी, कमल-सी सुन्दर और कमल से प्रकट हुई देवी को नमस्कार ।

नाम ४६–५४

ॐ पद्ममुख्यै नमः ।

ॐ पद्मनाभप्रियायै नमः ।

ॐ रमायै नमः ।

ॐ पद्ममालाधरायै नमः ।

ॐ देव्यै नमः ।

ॐ पद्मिन्यै नमः ।

ॐ पद्मगन्धिन्यै नमः ।

ॐ पुण्यगन्धायै नमः ।

ॐ सुप्रसन्नायै नमः ।६ ॥

ॐ । कमल-मुखी को; पद्मनाभ (विष्णु) की प्रिया को; आनंद देने वाली रमा को; कमलों की माला धारण करने वाली को; देवी को; पद्मिनी को; कमल की सुगंध वाली को; पवित्र सुगंध वाली को; और सदा प्रसन्न रहने वाली देवी को नमस्कार ।

नाम ५५–६३

ॐ प्रसादाभिमुख्यै नमः ।

ॐ प्रभायै नमः ।

ॐ चन्द्रवदनायै नमः ।

ॐ चन्द्रायै नमः ।

ॐ चन्द्रसहोदर्यै नमः ।

ॐ चतुर्भुजायै नमः ।

ॐ चन्द्ररूपायै नमः ।

ॐ इन्दिरायै नमः ।

ॐ इन्दुशीतलायै नमः ।७ ॥

ॐ । कृपा देने को सदा सम्मुख रहने वाली को; प्रभा-स्वरूपा को; चंद्रमुखी को; चंद्रमा-सी देवी को; चंद्रमा की बहन को, जो उसके साथ समुद्र से प्रकट हुईं; चार भुजाओं वाली को; चंद्र-रूपा को; इंदिरा को; और चंद्रमा-सी शीतल देवी को नमस्कार ।

नाम ६४–७२

ॐ आह्लादजनन्यै नमः ।

ॐ पुष्ट्यै नमः ।

ॐ शिवायै नमः ।

ॐ शिवकर्यै नमः ।

ॐ सत्यै नमः ।

ॐ विमलायै नमः ।

ॐ विश्वजनन्यै नमः ।

ॐ तुष्ट्यै नमः ।

ॐ दारिद्र्यनाशिन्यै नमः ।८ ॥

ॐ । आनंद उत्पन्न करने वाली को; पुष्टि-स्वरूपा को; कल्याणमयी शिवा को और कल्याण करने वाली को; सती को; निर्मल देवी को; विश्व-जननी को; तुष्टि (संतोष) को; और दरिद्रता का नाश करने वाली को नमस्कार ।

नाम ७३–८१

ॐ प्रीतिपुष्करिण्यै नमः ।

ॐ शान्तायै नमः ।

ॐ शुक्लमाल्याम्बरायै नमः ।

ॐ श्रियै नमः ।

ॐ भास्कर्यै नमः ।

ॐ बिल्वनिलयायै नमः ।

ॐ वरारोहायै नमः ।

ॐ यशस्विन्यै नमः ।

ॐ वसुन्धरायै नमः ।९ ॥

ॐ । प्रेम की पुष्करिणी (सरोवर) को; शांत देवी को; श्वेत माला और श्वेत वस्त्र धारण करने वाली को; श्री को; सूर्य-सी तेजस्वी को; बिल्व वृक्ष में वास करने वाली को; सुन्दर, सुडौल देवी को; यशस्विनी को; और धन को धारण करने वाली धरती वसुन्धरा को नमस्कार ।

नाम ८२–९०

ॐ उदाराङ्गायै नमः ।

ॐ हरिण्यै नमः ।

ॐ हेममालिन्यै नमः ।

ॐ धनधान्यकर्यै नमः ।

ॐ सिद्धये नमः ।

ॐ स्त्रैणसौम्यायै नमः ।

ॐ शुभप्रदायै नमः ।

ॐ नृपवेश्मगतानन्दायै नमः ।

ॐ वरलक्ष्म्यै नमः ।१० ॥

ॐ । सुन्दर, उदार अंगों वाली को; स्वर्ण-आभा वाली हरिणी को; सोने की माला पहनने वाली को; धन-धान्य देने वाली को; सिद्धि-स्वरूपा को; सौम्य, कोमल स्वभाव वाली को; शुभ देने वाली को; राजमहलों में आनंद से रहने वाली को; और वर देने वाली वरलक्ष्मी को नमस्कार ।

नाम ९१–९९

ॐ वसुप्रदायै नमः ।

ॐ शुभायै नमः ।

ॐ हिरण्यप्राकारायै नमः ।

ॐ समुद्रतनयायै नमः ।

ॐ जयायै नमः ।

ॐ मङ्गला देव्यै नमः ।

ॐ विष्णुवक्षःस्थलस्थितायै नमः ।

ॐ विष्णुपत्न्यै नमः ।

ॐ प्रसन्नाक्ष्यै नमः ।११ ॥

ॐ । धन देने वाली को; शुभा को; सोने के परकोटे में रहने वाली को; समुद्र की पुत्री को; जया को; मंगलमयी देवी को; विष्णु के वक्षःस्थल पर विराजने वाली को; विष्णु-पत्नी को; और प्रसन्न नेत्रों वाली देवी को नमस्कार ।

नाम १००–१०८

ॐ नारायणसमाश्रितायै नमः ।

ॐ दारिद्र्यध्वंसिन्यै नमः ।

ॐ देव्यै नमः ।

ॐ सर्वोपद्रववारिण्यै नमः ।

ॐ नवदुर्गायै नमः ।

ॐ महाकाल्यै नमः ।

ॐ ब्रह्माविष्णुशिवात्मिकायै नमः ।

ॐ त्रिकालज्ञानसम्पन्नायै नमः ।

ॐ भुवनेश्वर्यै नमः ।१२ ॥

ॐ । नारायण के आश्रय में रहने वाली को; दरिद्रता का विनाश करने वाली को; देवी को; सब विपत्तियाँ दूर करने वाली को; नवदुर्गा और महाकाली को; ब्रह्मा, विष्णु और शिव जिनके ही स्वरूप हैं, उन्हें; भूत, वर्तमान और भविष्य, तीनों कालों को जानने वाली को; और समस्त लोकों की स्वामिनी भुवनेश्वरी को नमस्कार ।

स्रोत: Shri Lakshmi Ashtottara Shatanamavali as printed in "Prabhata Stotranidhi" (stotranidhi.com, Devanagari); cross-checked name by name with sanskritdocuments.org lakshmi108.itx (encoded by Sowmya Ramkumar; proofread by Shri Devi Kumar, Sunder Hattangadi, Easwaran and Tanvir Chowdhury) and shlokam.org (Sri Maha Lakshmi Ashtottara Sata Namavali), and against the verse form, the Shri Lakshmi Ashtottara Shatanama Stotram (sanskritdocuments.org laxmi108naama.itx)

ये अर्थ हमारा पहला मसौदा हैं । अभी किसी विद्वान ने इनकी जाँच नहीं की है । कोई भूल दिखे तो हमें ज़रूर बताएँ ।

getnitya.com/hi/lakshmi/lakshmi-ashtottara-shatanamavali/